Name → Tanu

Course → Sanskrit Hons. (B.A)

Paper → Sanskrit Meter and Music

Semester → 4th

Roll no → SKT/18/02

Session → 2019-2020

मुख्य टिप्पणियाँ

★ नाद: गीत नादात्मक है। वाद्य नाद को अभिव्यक्ति करने के कारण प्रशंसित होता है। नृत्त उन दो का अनुगत है। इसलिए तीनों गीत, वाद्य, नृत्त नाद के अधीन हैं। नाद से वर्ण, वर्ण से पद, पद से वाक्य व्यक्त होता है। वाक्य से ही यह जगत् का व्यवहार होता है। इसलिए जगत् नाद के दो प्रकार होते हैं।
"आहत" "अनाहत" यह नाद शरीर में प्रकाशित
1. 2. होता है। व्यक्त - अव्यक्त, आहत - अनाहत, वर्णयुक्त - वर्णरहित आदि ध्वनि के जितने रूप हो सकते हैं। सभी नाद के अंदर आते हैं। आहत वाचिक रूप और अनाहत शरीर के अंदर ही सुना जाता है। क्रम से इन 5 स्थानों में स्थित नाद अतिसूक्ष्म और सूक्ष्म, पुष्ट और अपुष्ट तथा कृत्रिम इस प्रकार 5 संज्ञा धारण करता है। नाद शब्द को निरुक्ति 'ना' से प्राण नामक वायु को तथा द से अग्नि को जाना जाता है। और यह प्राण और अग्नि के संयोग से उत्पन्न हुआ 'नद' धातु से नाद शब्द उत्पन्न हुआ। नाद व्यवहार में 3 प्रकार का है। हृदय में मन्द्र, कंठ में मध्य, मूर्धा में तार जो एक से दूसरे में दुगना होता है।

★ गीति:- पद्य के पाद में जो बहाव होता है। उसे गीति कहते हैं। छन्दोबद्ध रचना को लय को आरोह अवरोह के साथ पढ़ा जाता है। छन्द को इसी लय के गीति कहा जाता है।

★ यति :- आचार्य पिङ्गल ने छन्द सूत्र में 'यति' का विधान किया है। श्लोक उच्चारण के समय जीवा जहाँ अपनी इच्छा से रुक जाती है। उसे यति कहते है। पद्य या श्लोक को पढ़ने मे आवश्यकता अनुसार कुछ अक्षरों के बाद विराम होता है। इसी अल्प विराम कुछ अक्षरों के बाद विराम होता इसी अल्प विराम को गद्य मे 'विराम' और पद्य मे यति कहते है। यति शब्द का अर्थ अनेक विद्वानों ने भिन्न-भिन्न किया है। कुछ विद्वान इसे विराम, विश्राम, विरति विच्छेद आदि भी कहते है।

★ मूर्च्छना :- क्रम से सात स्वरों का आरोह और अवरोह मूर्च्छना है। मूर्च्छना शब्द की उत्पत्ति मतंग के अनुसार 'मूर्छ' धातु से है। इसका अर्थ (व्याप्त होना, वृद्धि है) मोह और समुच्छ्राय मोहार्थक मानने पर मूर्च्छना का अर्थ" जिसके द्वारा राग व्याप्त होते है। भारत के मूर्च्छना, लक्षण मे आरोह और अवरोह सम्मिलित नहीं है। मतंग ने मूर्च्छना और तान का भेद बताते समय मूर्च्छना मे आरोह क्रम और तान मे अवरोह क्रम कहा है।

★ समावृत्त :- जिस पद्य मे चारो-चरणो मे अक्षर या वर्ण की संख्या समान हो, उसे समवृत्त कहते है। जैसे -उपेन्द्रवजराः छन्द। क्योंकि इसके चारो चरणों मे अक्षरो की संख्या समान है। सभी में ।। अक्षर होते है।

★ विषमवृत :- जिस छन्द के चारों चरणों मे वर्णो और स्वरों की संख्या अथवा लक्षण भिन्न-भिन्न है। वे विषमवृत कहलाते हैं। जैसे अर्द्धगाथा गाथा।

छन्द :- विभाजन की दृष्टि से छन्द दो प्रकार के होते हैं। वैदिक छन्द और लौकिक छन्द।

★ वैदिक काल। वैदिक ग्रन्थ। वेद आदि मे पाए जाने वाले छन्द वैदिक छन्द है।

★ लौकिक साहित्य मे गण के विधान द्वारा वर्ण संख्या आदि पर आधारित छन्द लौकिक है। इसके लक्षण व उदाहरण :-

★ वैदिक छन्द : गायत्री छन्द

अग्निमीळे पुरोहितं — 8
यज्ञस्य देवमृत्विजम् → 8
होतारं रत्नधातमम् → 8
—
24

लक्षण
• गायत्र्या वसवः
• गायत्री च त्रिपदे

★ त्रिष्टुप् छन्द

उषो वाजेन वाजिनि प्रचेता :- ॥
स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि - ॥
पुराणी देवि : युवति : पुरन्धि — ॥
अनु व्रतं चरसि विश्ववारे — ॥
—
44

लक्षण
• एकादशाक्षरैः पादे।
• चतुश्चत्वारिंशत् त्रिष्टुबक्षराणि चतुष्पदा।

लौकिक छन्द :-

→ मालिनी छन्द

विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं — 15
शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ। — 15
रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ — 15
दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः। — 15

60

लक्षण

- न-न-म-य-य-युतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
- मालिनी नौ म यौ य
- प्रत्येक चरण 15 वर्ण

★ शिखरिणी छन्द

य म न स भ लग

शिरः शार्वं स्वर्गात् पशुपतिशिरस्तः क्षितिधरं — 17
महीध्रादुत्तुङ्गादवनिमवनेश्चापि जलधिम् — 17
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगता स्तोकमथवा — 17
विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः — 17

- रसै रुद्रैश्छिन्ना य-म-न-स-भ लागः शिखरिणी
- शिखरिणी य-मौ न-सौ-भ-लौ-ग इत्युक्ता:
- यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु, गुरु।